ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-252-258, YEAR JUNE 2016

भारत की सैन्य शक्ति का सामरिक मूल्यांकनः स्थल, जल एवं वायु शक्ति के संदर्भ में

डॉ0 विशाल कुमार श्रीवास्तव

सारांश *– भारत की सैन्य शक्ति राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता, संप्रभुता की रक्षा तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की सामरिक प्रतिष्ठा का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि उसे एक ओर हिमालयी सीमाओं की सुरक्षा करनी पड़ती है, दूसरी ओर विशाल समुद्री क्षेत्र, हिंद महासागर के सामरिक मार्गों तथा वायु क्षेत्र की निगरानी भी सुनिश्चित करनी होती है। इस दृष्टि से भारतीय सैन्य शक्ति का मूल्यांकन केवल सैनिकों की संख्या, हथियारों या रक्षा बजट के आधार पर नहीं किया जा सकता, बल्कि इसके लिए स्थल सेना, नौसेना और वायुसेना की युद्धक क्षमता, संगठनात्मक दक्षता, तकनीकी विकास, संयुक्त संचालन, रसद व्यवस्था और रणनीतिक तैयारी का समग्र अध्ययन आवश्यक है।*

भारतीय सैन्य शक्ति का सामरिक मूल्यांकन विशेष महत्त्व रखता है। यह वह समय था जब भारत अपनी पारंपरिक सैन्य क्षमताओं को आधुनिक बनाने, सीमावर्ती सुरक्षा को मजबूत करने, समुद्री हितों की रक्षा करने और आतंकवाद जैसी गैर–पारंपरिक चुनौतियों का सामना करने की दिशा में सक्रिय था।

प्रस्तुत लेख में भारतीय थल सेना, नौसेना और वायुसेना की क्षमताओं का तुलनात्मक एवं सामरिक विश्लेषण किया गया है। साथ ही, तीनों सेनाओं के समन्वय, रक्षा आधुनिकीकरण, क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर भी विचार किया गया है। लेख का केंद्रीय तर्क यह है कि भारत की प्रभावी सैन्य शक्ति का निर्धारण तीनों सेनाओं की पृथक क्षमता के साथ–साथ उनके एकीकृत उपयोग, स्वदेशी तकनीकी विकास और स्पष्ट सामरिक उद्देश्यों से होता है।

प्रस्तावना– किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा व्यवस्था में सैन्य शक्ति का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। सैन्य शक्ति का उद्देश्य केवल युद्ध करना नहीं, बल्कि युद्ध की संभावनाओं को कम करना, विरोधी को आक्रामक कदम उठाने से रोकना, राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा करना और संकट के समय राज्य की निर्णय लेने की स्वतंत्रता को बनाए रखना भी है। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सैन्य शक्ति को राष्ट्रीय सामर्थ्य के एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में देखा जाता है। आर्थिक संसाधन, वैज्ञानिक प्रगति, औद्योगिक विकास, कूटनीतिक संबंध और राजनीतिक स्थिरता इसके प्रभाव को निर्धारित करने वाले अन्य कारक हैं।

भारत विश्व के प्रमुख क्षेत्रीय शक्तिशाली देशों में शामिल है। उसकी भौगोलिक स्थिति, जनसंख्या, आर्थिक क्षमता, विशाल समुद्री तटरेखा और पड़ोसी देशों के साथ जटिल सुरक्षा संबंध उसकी रक्षा आवश्यकताओं को विशिष्ट बनाते हैं। भारत की सीमाएँ पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और म्यांमार जैसे देशों से जुड़ी हैं। इसके अतिरिक्त हिंद महासागर में भारत के समुद्री हित उसे एक विस्तृत सामरिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

भारत की सुरक्षा संबंधी चुनौतियों में सीमा पार आतंकवाद, जम्मू–कश्मीर की स्थिति, चीन के साथ सीमा विवाद, हिंद महासागर में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा और रक्षा उपकरणों के आधुनिकीकरण की आवश्यकता प्रमुख थीं। इन परिस्थितियों में भारतीय सैन्य शक्ति का मूल्यांकन राष्ट्रीय सुरक्षा की वास्तविक आवश्यकताओं के संदर्भ में करना आवश्यक है।

भारतीय सशस्त्र बलों की तीन प्रमुख शाखाएँ हैं– थल सेना, नौसेना और वायुसेना। थल सेना भूमि सीमाओं की सुरक्षा तथा स्थल–आधारित सैन्य अभियानों का दायित्व निभाती है। नौसेना समुद्री सीमाओं, समुद्री व्यापार मार्गों और समुद्री हितों की रक्षा करती है। वायुसेना वायु क्षेत्र की सुरक्षा, वायु रक्षा, सामरिक परिवहन और आवश्यकतानुसार आक्रामक वायु अभियानों में भूमिका निभाती है। इन तीनों सेनाओं की क्षमताएँ

असिस्टेंट प्रोफेसर– सैन्य अध्ययन, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत

अलग–अलग होने के बावजूद राष्ट्रीय सुरक्षा के व्यापक उद्देश्य में परस्पर पूरक हैं।

इस लेख का उद्देश्य परिस्थितियों में भारतीय सैन्य शक्ति का सामरिक विश्लेषण करना, तीनों सेनाओं की प्रमुख विशेषताओं और सीमाओं को समझना तथा उन सुधारों की पहचान करना है, जो भारत की दीर्घकालीन सुरक्षा क्षमता को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

भारतीय थल सेना का सामरिक मूल्यांकन– भारतीय थल सेना देश की स्थल सीमाओं की सुरक्षा, सीमा पार से होने वाली सैन्य चुनौतियों का सामना करने, आतंकवाद–विरोधी अभियानों तथा आवश्यकता पड़ने पर बड़े पैमाने पर स्थल युद्ध लड़ने की प्रमुख संस्था है। भारत की भौगोलिक परिस्थितियाँ थल सेना के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हैं, क्योंकि उसे हिमालय के ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों, रेगिस्तानी सीमाओं, मैदानी भूभागों और घने जंगलों में कार्य करना पड़ता है।

संगठनात्मक संरचना एवं युद्धक क्षमता: भारतीय थल सेना की प्रमुख विशेषता उसकी विशाल संगठनात्मक संरचना, विविध परिस्थितियों में कार्य करने का अनुभव और व्यापक सैन्य प्रशिक्षण है। पर्वतीय युद्ध, रेगिस्तानी अभियान, मैदानी युद्ध तथा प्रतिकूल मौसम में संचालन की क्षमता इसे विशिष्ट बनाती है। सेना की विभिन्न कमानें देश की सीमाओं और रणनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करती हैं।

थल सेना की युद्धक क्षमता का मूल्यांकन करते समय सैनिकों की संख्या के साथ–साथ प्रशिक्षण, नेतृत्व, संचार व्यवस्था, हथियार प्रणालियों और रसद प्रबंधन को भी ध्यान में रखना आवश्यक था। आधुनिक युद्ध में केवल बड़ी सेना होना पर्याप्त नहीं है। सैनिकों को समय पर आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराना, विभिन्न इकाइयों के बीच सूचनाओं का आदान–प्रदान करना तथा बदलती परिस्थितियों में शीघ्र निर्णय लेना भी अत्यंत आवश्यक है।

सीमावर्ती सुरक्षा एवं सामरिक चुनौतियाँ: भारत की पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तान के साथ लंबे समय से तनाव तथा सीमा पार आतंकवाद प्रमुख सुरक्षा चुनौतियाँ रहे हैं। उत्तरी सीमा पर चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा से संबंधित विवाद भी भारत की सामरिक चिंताओं का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में सैन्य तैनाती के लिए विशेष प्रशिक्षण, उपयुक्त परिवहन साधन, सड़क निर्माण, संचार सुविधाएँ और निरंतर रसद आपूर्ति की आवश्यकता होती है। इस कारण सीमावर्ती बुनियादी ढाँचे का विकास सैन्य तैयारी से सीधे जुड़ा हुआ है।

आधुनिकीकरण एवं प्रमुख सीमाएँ: थल सेना की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए आधुनिक तोपखाने, बख्तरबंद वाहन, सुरक्षित संचार प्रणाली, रात्रि में देखने वाले उपकरण, निगरानी तकनीक और बेहतर व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों की आवश्यकता होती है। भारतीय सेना के सामने पुराने उपकरणों के प्रतिस्थापन, खरीद प्रक्रियाओं में विलंब तथा कुछ क्षेत्रों में तकनीकी अंतर जैसी समस्याएँ है।

सेना के आधुनिकीकरण में स्वदेशी रक्षा उद्योग की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। घरेलू स्तर पर हथियारों और उपकरणों के विकास से आयात पर निर्भरता कम की जा सकती है तथा रखरखाव एवं मरम्मत में आत्मनिर्भरता बढ़ाई जा सकती है। हालांकि, स्वदेशी उत्पादन को सफल बनाने के लिए गुणवत्ता, समयबद्ध आपूर्ति, अनुसंधान और उपयोगकर्ता सेनाओं की आवश्यकताओं के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है। इस प्रकार, भारतीय थल सेना की प्रमुख शक्ति उसका अनुभव, संगठनात्मक विस्तार और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता है। इसकी प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए तकनीकी आधुनिकीकरण, बेहतर रसद, खुफिया सूचनाओं के प्रभावी उपयोग और सीमावर्ती बुनियादी ढाँचे के विकास पर निरंतर ध्यान देना आवश्यक है।

भारतीय नौसेना का सामरिक मूल्यांकन– भारत की समुद्री स्थिति उसे हिंद महासागर क्षेत्र में विशेष सामरिक महत्त्व प्रदान करती है। देश की ऊर्जा आवश्यकताओं, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और समुद्री परिवहन का बड़ा हिस्सा समुद्री मार्गों से जुड़ा है। इसलिए भारतीय नौसेना की भूमिका

केवल समुद्री सीमा की रक्षा तक सीमित नहीं है; वह समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, समुद्री निगरानी, संकट के समय नागरिकों की निकासी और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने में भी योगदान देती है।

हिंद महासागर का सामरिक महत्त्वः हिंद महासागर एशिया, अफ्रीका और यूरोप को जोड़ने वाले प्रमुख समुद्री व्यापार मार्गों का क्षेत्र है। तेल और अन्य ऊर्जा संसाधनों के परिवहन के कारण यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारत की भौगोलिक स्थिति उसे इस क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करती है। हिंद महासागर में प्रमुख शक्तियों की बढ़ती उपस्थिति भारत की समुद्री सुरक्षा संबंधी चिंताओं का एक हिस्सा थी। समुद्री मार्गों पर निगरानी, पनडुब्बियों की गतिविधियों की जानकारी, तटीय प्रतिष्ठानों की सुरक्षा और समुद्री आतंकवाद की रोकथाम जैसे विषय नौसेना की रणनीतिक प्राथमिकताओं में शामिल है।

नौसैनिक शक्ति के प्रमुख घटकः नौसेना की शक्ति का आकलन उसके युद्धपोतों, पनडुब्बियों, विमानवाहक पोतों, समुद्री गश्ती विमानों, हेलीकॉप्टरों, संचार प्रणालियों और समुद्री निगरानी क्षमता के आधार पर किया जाता है। भारतीय नौसेना के पास विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रमादित्य, विभिन्न श्रेणियों के विध्वंसक एवं फ्रिगेट, पारंपरिक पनडुब्बियाँ और परमाणु ऊर्जा से संचालित आईएनएस अरिहंत जैसी क्षमताएँ विकसित हो रही है। आईएनएस अरिहंत का महत्त्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यह भारत की समुद्र–आधारित परमाणु प्रतिरोधक क्षमता के विकास में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। समुद्र–आधारित प्रतिरोधक क्षमता का उद्देश्य संभावित परमाणु हमले के बाद भी जवाबी कार्रवाई की विश्वसनीय क्षमता बनाए रखना है। हालांकि, ऐसी क्षमता की वास्तविक प्रभावशीलता सुरक्षित संचार, परिचालन विश्वसनीयता, प्रशिक्षित कर्मियों और निरंतर तकनीकी विकास पर निर्भर करती है।

समुद्री सुरक्षा की चुनौतियाँः भारतीय नौसेना के सामने प्रमुख चुनौतियों में समुद्री क्षेत्र की विस्तृत निगरानी, पनडुब्बी रोधी युद्ध, समुद्री आतंकवाद, तटीय सुरक्षा और तकनीकी आधुनिकीकरण शामिल है। नवंबर 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों ने यह स्पष्ट किया था कि समुद्री मार्गों का दुरुपयोग राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। इसके बाद तटीय निगरानी, समुद्री पुलिसिंग तथा विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के बीच समन्वय को अधिक महत्त्व दिया गया। नौसेना की क्षमता का विस्तार आर्थिक संसाधनों और तकनीकी उपलब्धता पर भी निर्भर करता है। आधुनिक युद्धपोतों और पनडुब्बियों के निर्माण में अधिक समय और पूँजी लगती है। इनके रखरखाव, प्रशिक्षण तथा तकनीकी उन्नयन के लिए दीर्घकालीन निवेश आवश्यक होता है।

अतः भारतीय नौसेना की सामरिक शक्ति का वास्तविक मूल्यांकन केवल उसके जहाजों की संख्या से नहीं, बल्कि समुद्री क्षेत्र की निगरानी, युद्धक तैयारी, परिचालन उपलब्धता और अन्य सेनाओं के साथ समन्वय से किया जाना चाहिए।

भारतीय वायुसेना का सामरिक मूल्यांकनः आधुनिक युद्ध में वायु शक्ति का महत्त्व लगातार बढ़ा है। वायुसेना कम समय में दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचने, हवाई हमलों से रक्षा करने, शत्रु की सैन्य गतिविधियों पर निगरानी रखने और स्थल सेना तथा नौसेना को सहायता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत जैसे विशाल देश के लिए वायु शक्ति सीमाओं की रक्षा और संकट के समय शीघ्र सैन्य प्रतिक्रिया का आवश्यक साधन है।

वायुसेना की प्रमुख क्षमताएँः भारतीय वायुसेना के कार्यों में वायु रक्षा, लड़ाकू विमान संचालन, सामरिक परिवहन, हेलीकॉप्टर सहायता, हवाई निगरानी और सैन्य रसद शामिल हैं। सुखोई–30 एमकेआई, मिराज–2000, मिग–29 और अन्य लड़ाकू विमान भारतीय वायुसेना की परिचालन क्षमता का हिस्सा है। परिवहन विमानों और हेलीकॉप्टरों के माध्यम से दुर्गम क्षेत्रों में सैनिकों, उपकरणों और आवश्यक सामग्री की आपूर्ति की जाती है। वायुसेना की प्रभावशीलता विमान की तकनीकी क्षमता के साथ–साथ प्रशिक्षित पायलटों,

आधुनिक हथियार प्रणालियों, रडार, सुरक्षित संचार, हवाई अड्डों और रखरखाव सुविधाओं पर निर्भर करती है। किसी संकट के दौरान वायु शक्ति तभी प्रभावी सिद्ध होती है जब आवश्यक विमान उपलब्ध हों और उन्हें पर्याप्त तकनीकी सहायता प्राप्त हो।

वायु रक्षा एवं तकनीकी आधुनिकीकरणः भारत के लिए वायु क्षेत्र की सुरक्षा एक जटिल कार्य है। इसके अंतर्गत लड़ाकू विमानों के अतिरिक्त रडार, सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें, निगरानी प्रणालियाँ और विभिन्न रक्षा प्रतिष्ठानों के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है। वायु रक्षा प्रणाली का उद्देश्य संभावित हवाई खतरों की पहचान करना, उनका आकलन करना और आवश्यकतानुसार उनका मुकाबला करना है। भारतीय वायुसेना के सामने लड़ाकू विमानों की उपलब्धता, पुराने विमानों के प्रतिस्थापन, आधुनिक तकनीक के समावेश और स्वदेशी विमान निर्माण को आगे बढ़ाने जैसी चुनौतियाँ थीं। तेजस हल्के लड़ाकू विमान का विकास भारत की स्वदेशी एयरोस्पेस क्षमता की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास है। हालांकि, स्वदेशी विमानन उद्योग को व्यापक परिचालन आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने के लिए अनुसंधान, उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता में निरंतर सुधार जरूरी है।

वायु शक्ति की सीमाएँः वायुसेना के आधुनिकीकरण में अत्यधिक लागत, विमानों के रखरखाव की जटिलता, तकनीकी निर्भरता और प्रशिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता प्रमुख बाधाएँ हैं। आधुनिक लड़ाकू विमानों को प्रभावी बनाने के लिए केवल विमान खरीदना पर्याप्त नहीं है; हथियार प्रणालियों, स्पेयर पार्ट्स, पायलट प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता की पूरी व्यवस्था विकसित करनी होती है। इसलिए भारतीय वायुसेना की सामरिक सफलता का आधार आधुनिक विमान, विश्वसनीय वायु रक्षा, बेहतर निगरानी, पर्याप्त परिचालन उपलब्धता और थल सेना तथा नौसेना के साथ संयुक्त योजना होना चाहिए।

स्थल, जल एवं वायु शक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण– भारत की सैन्य शक्ति की वास्तविक प्रभावशीलता तीनों सेनाओं के सामूहिक योगदान से निर्धारित होती है। थल सेना भूमि पर नियंत्रण और सीमाओं की रक्षा करती है, नौसेना समुद्री हितों की सुरक्षा करती है तथा वायुसेना वायु क्षेत्र की रक्षा और अन्य सेनाओं को सहायता प्रदान करती है। इनकी भूमिकाएँ अलग–अलग होने के बावजूद किसी बड़े सैन्य संकट में परस्पर निर्भरता अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

मूल्यांकन का आधार	थल सेना	नौसेना	वायुसेना
प्रमुख दायित्व	स्थल सीमाओं की रक्षा	समुद्री सुरक्षा	वायु क्षेत्र की रक्षा
प्रमुख क्षमता	स्थल युद्ध एवं दुर्गम क्षेत्रों में संचालन	समुद्री निगरानी एवं समुद्री प्रतिरोध	तीव्र प्रतिक्रिया एवं हवाई सहायता
प्रमुख चुनौती	कठिन भूभाग एवं रसद	विशाल समुद्री क्षेत्र की निगरानी	विमान उपलब्धता एवं तकनीकी लागत
आधुनिकीकरण की आवश्यकता	तोपखाना, संचार एवं गतिशीलता	पनडुब्बियाँ, युद्धपोत एवं निगरानी	आधुनिक विमान एवं वायु रक्षा
संयुक्त भूमिका	स्थल अभियानों का संचालन	समुद्री मार्गों की सुरक्षा	वायु सहायता एवं सामरिक परिवहन

इस तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि किसी एक सेना की श्रेष्ठता के आधार पर संपूर्ण सैन्य शक्ति का आकलन करना उचित नहीं है। पर्वतीय सीमाओं पर थल सेना का महत्त्व अधिक हो सकता है, जबकि समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा में नौसेना प्रमुख भूमिका निभाती है। इसी प्रकार, व्यापक संकट के समय वायुसेना की तीव्र परिवहन और निगरानी क्षमता निर्णायक योगदान दे सकती है। आज भारत के लिए एक प्रमुख आवश्यकता तीनों सेनाओं के बीच सूचनाओं का बेहतर आदान–प्रदान, संयुक्त प्रशिक्षण और संसाधनों का प्रभावी उपयोग थी। यदि तीनों सेनाएँ अलग–अलग योजनाओं के आधार पर काम करें, तो संसाधनों का दोहराव और परिचालन संबंधी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके विपरीत, समन्वित योजना से उपलब्ध सैन्य संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग संभव होता है।

भारत की सैन्य शक्ति और क्षेत्रीय सुरक्षा– भारत की सैन्य शक्ति का मूल्यांकन दक्षिण एशिया की भू–राजनीतिक परिस्थितियों से अलग करके नहीं किया जा सकता। पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद, आतंकवाद और सैन्य तनाव तथा चीन के साथ सीमा संबंधी विवाद भारत की रक्षा नीति को प्रभावित करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त हिंद महासागर में सामरिक प्रतिस्पर्धा और बाहरी शक्तियों की बढ़ती गतिविधियाँ भारत के सुरक्षा दृष्टिकोण को व्यापक बनाती हैं। भारत की रक्षा नीति में प्रतिरोधक क्षमता का विशेष महत्त्व है। प्रतिरोध का अर्थ संभावित विरोधी को यह विश्वास दिलाना है कि आक्रामक कार्रवाई करने की स्थिति में उसे अस्वीकार्य लागत उठानी पड़ सकती है। यह क्षमता विश्वसनीय सैन्य तैयारी, राजनीतिक संकल्प, प्रभावी खुफिया व्यवस्था और संकट के समय नियंत्रित प्रतिक्रिया पर निर्भर करती है। हालाँकि, सैन्य शक्ति और वास्तविक सैन्य संघर्ष के बीच अंतर समझना आवश्यक है। अत्यधिक सैन्य तनाव आर्थिक विकास, व्यापार, निवेश और क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित कर सकता है। इसलिए सैन्य तैयारी के साथ कूटनीतिक संवाद, सीमा प्रबंधन और विश्वास निर्माण के उपाय भी महत्त्वपूर्ण हैं। भारत की क्षेत्रीय भूमिका केवल सैन्य प्रतिरोध तक सीमित नहीं है। प्राकृतिक आपदाओं में सहायता, समुद्री बचाव अभियान, मानवीय सहायता तथा मित्र देशों के साथ प्रशिक्षण और रक्षा सहयोग भी उसकी सामरिक उपस्थिति को मजबूत करते हैं। इस प्रकार सैन्य शक्ति का उपयोग राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान देने के लिए भी किया जा सकता है।

सैन्य आधुनिकीकरण की आवश्यकता एवं प्रमुख चुनौतियाँ– भारतीय सैन्य शक्ति के सामने आधुनिकीकरण सबसे महत्त्वपूर्ण विषयों में से एक है। युद्ध के स्वरूप में तकनीकी परिवर्तन, सटीक हथियारों का विकास, साइबर गतिविधियों का विस्तार और वास्तविक समय में सूचना प्राप्त करने की आवश्यकता ने पारंपरिक सैन्य संरचनाओं के पुनर्मूल्यांकन को आवश्यक है।

रक्षा बजट और संसाधन प्रबंधनः सैन्य आधुनिकीकरण के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन आवश्यक हैं, लेकिन रक्षा बजट का प्रभाव केवल उसकी कुल राशि से निर्धारित नहीं होता। धन का आवंटन, पूँजीगत खरीद, प्रशिक्षण, रखरखाव और अनुसंधान पर व्यय का संतुलन भी महत्त्वपूर्ण है। यदि बजट का बड़ा हिस्सा वेतन और नियमित खर्चों में चला जाए, तो नई तकनीक तथा उपकरणों की खरीद के लिए उपलब्ध संसाधन सीमित हो सकते हैं। इसलिए भारत को दीर्घकालीन रक्षा नियोजन, खरीद प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और परियोजनाओं की समयबद्ध समीक्षा पर ध्यान देना चाहिए। सैन्य खरीद में लागत के साथ गुणवत्ता, विश्वसनीयता और जीवनचक्र संबंधी खर्चों का भी आकलन आवश्यक है।

स्वदेशी रक्षा उत्पादनः भारत की रक्षा क्षमता को मजबूत बनाने के लिए स्वदेशी रक्षा उद्योग का विकास महत्त्वपूर्ण है। आज तक भारत विभिन्न प्रकार के रक्षा उपकरणों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भर है। यह निर्भरता संकट के समय स्पेयर पार्ट्स, तकनीकी सहायता और आपूर्ति की निरंतरता को प्रभावित कर सकती है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, सार्वजनिक क्षेत्र की रक्षा इकाइयों, निजी उद्योगों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग को मजबूत करना आवश्यक है। स्वदेशी उत्पादन का उद्देश्य केवल आयात कम करना नहीं, बल्कि घरेलू तकनीकी क्षमता, रोजगार, नवाचार और दीर्घकालीन रणनीतिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना भी है।

सूचना एवं तकनीकी युद्धः आधुनिक सैन्य अभियानों में संचार, निगरानी, उपग्रह आधारित सेवाओं, साइबर सुरक्षा और इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों का महत्त्व बढ़ गया है। किसी सैन्य संगठन की प्रभावशीलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह सही सूचना कितनी जल्दी प्राप्त करता है और उसका विश्लेषण करके निर्णय कैसे लेता है। भारत के लिए आवश्यक था कि पारंपरिक सैन्य क्षमता के साथ तकनीकी सुरक्षा, सुरक्षित संचार, साइबर रक्षा और आधुनिक प्रशिक्षण को भी प्राथमिकता दी

जाए। तकनीकी विकास का उद्देश्य मानव निर्णय क्षमता को समाप्त करना नहीं, बल्कि उसे अधिक विश्वसनीय जानकारी और बेहतर संसाधनों से समर्थ बनाना होना चाहिए।

भारतीय सैन्य शक्ति को मजबूत बनाने के उपाय– भारतीय सैन्य शक्ति की दीर्घकालीन प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए कुछ प्रमुख सुधार आवश्यक हैं।

पहला, संयुक्त सैन्य योजना को मजबूत करना। तीनों सेनाओं के बीच प्रशिक्षण, संचार और संचालन संबंधी समन्वय विकसित किया जाना चाहिए। संयुक्त योजना से संकट के समय निर्णय लेने और संसाधनों के उपयोग में सुधार हो सकता है।

दूसरा, सीमावर्ती बुनियादी ढाँचे का विकास। सड़कों, पुलों, हवाई पट्टियों, संचार सुविधाओं और रसद केंद्रों का विकास दूरस्थ क्षेत्रों में सैन्य तैयारी के लिए आवश्यक है। इन सुविधाओं का उपयोग स्थानीय नागरिकों और क्षेत्रीय विकास के लिए भी किया जा सकता है।

तीसरा, स्वदेशी अनुसंधान और उत्पादन को प्रोत्साहन। रक्षा उद्योग को आधुनिक तकनीक, गुणवत्तापूर्ण उत्पादन और समयबद्ध आपूर्ति के अनुरूप विकसित करना चाहिए। इसके लिए सरकारी संस्थानों और निजी क्षेत्र के बीच प्रभावी सहयोग आवश्यक है।

चौथा, मानव संसाधन और प्रशिक्षण पर ध्यान। सैनिकों, पायलटों और नौसैनिक कर्मियों को आधुनिक तकनीक तथा बदलती युद्ध परिस्थितियों के अनुरूप प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। नेतृत्व, अनुशासन, मानसिक तैयारी और तकनीकी दक्षता सैन्य सफलता के प्रमुख आधार हैं।

पाँचवाँ, कूटनीति और सैन्य तैयारी में संतुलन। सैन्य शक्ति का उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा और संभावित आक्रमण को रोकना होना चाहिए। संवाद, सीमा प्रबंधन और क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से अनावश्यक संघर्ष की आशंका कम की जा सकती है।

छठा, जवाबदेही और दीर्घकालीन नियोजन। रक्षा परियोजनाओं की नियमित समीक्षा, लागत नियंत्रण और स्पष्ट प्राथमिकताएँ सुनिश्चित की जानी चाहिए। इससे संसाधनों का बेहतर उपयोग होगा और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनेगी।

भारतीय सैन्य शक्ति का व्यापक सामरिक महत्त्व– भारतीय सैन्य शक्ति का महत्त्व केवल युद्ध के मैदान तक सीमित नहीं है। यह राष्ट्रीय संप्रभुता, राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक हितों और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति से भी संबंधित है। एक विश्वसनीय सैन्य व्यवस्था देश को बाहरी दबावों के विरुद्ध अपनी नीतियों का स्वतंत्र रूप से निर्धारण करने में सहायता प्रदान करती है। स्थल सेना सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा और स्थिरता का आधार है। नौसेना सुरक्षा में योगदान देती है। वायुसेना राष्ट्रीय वायु क्षेत्र की रक्षा और संकट के समय तीव्र सैन्य सहायता प्रदान करती है। इन सभी क्षमताओं का समन्वित उपयोग भारत को अपनी व्यापक सुरक्षा आवश्यकताओं का सामना करने में सहायता देता है। फिर भी, सैन्य शक्ति को राष्ट्रीय शक्ति का एकमात्र आधार नहीं माना जा सकता। आर्थिक विकास, वैज्ञानिक अनुसंधान, सामाजिक स्थिरता, औद्योगिक क्षमता और प्रभावी कूटनीति भी राष्ट्रीय सुरक्षा के आवश्यक घटक हैं। एक मजबूत अर्थव्यवस्था ही दीर्घकाल तक आधुनिक सैन्य बलों का वित्तपोषण कर सकती है।

इसी प्रकार, तकनीकी आत्मनिर्भरता और संस्थागत दक्षता सैन्य क्षमता को अधिक टिकाऊ बनाती हैं। आतंकवाद, सीमावर्ती तनाव, समुद्री सुरक्षा और तकनीकी परिवर्तन ने भारतीय रक्षा व्यवस्था के समक्ष बहुआयामी आवश्यकताएँ प्रस्तुत कीं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सैन्य तैयारी के साथ खुफिया सहयोग, प्रशासनिक समन्वय और राजनीतिक विवेक की भी आवश्यकता है।

निष्कर्ष– भारत की सैन्य शक्ति का सामरिक मूल्यांकन यह स्पष्ट करता है कि देश की रक्षा क्षमता उसकी तीनों सेनाओंकृथल सेना, नौसेना और वायुसेनाकृकी संयुक्त भूमिका पर आधारित है। थल सेना की विशाल संगठनात्मक संरचना और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में कार्य करने का

अनुभव, नौसेना की समुद्री सुरक्षा क्षमता तथा वायुसेना की तीव्र प्रतिक्रिया और हवाई सहायता की शक्ति भारतीय सुरक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्तंभ हैं।

थल सेना के सामने सीमावर्ती सुरक्षा, आधुनिकीकरण और रसद संबंधी चुनौतियाँ थीं। नौसेना के लिए समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, पनडुब्बी संबंधी चुनौतियाँ और व्यापक समुद्री क्षेत्र की निगरानी महत्त्वपूर्ण विषय थे। वायुसेना को आधुनिक विमानों की उपलब्धता, तकनीकी उन्नयन और प्रभावी वायु रक्षा व्यवस्था की आवश्यकता थी। इन चुनौतियों का समाधान केवल अधिक हथियार खरीदने से नहीं, बल्कि प्रशिक्षण, संगठनात्मक सुधार, तकनीकी अनुसंधान और संयुक्त सैन्य नियोजन से संभव है। सैन्य शक्ति का प्रयोग राष्ट्रीय सुरक्षा, राजनीतिक निर्णय और संकट प्रबंधन के व्यापक संदर्भ में किया जाता है। ऐसी परिस्थितियों में सैन्य तैयारी और रणनीतिक संयम के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

अंततः, भारत की वास्तविक सामरिक क्षमता का निर्धारण केवल सैनिकों, युद्धपोतों या विमानों की संख्या से नहीं किया जा सकता। इसका आधार आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षित मानव संसाधन, स्वदेशी रक्षा उत्पादन, आर्थिक सामर्थ्य, खुफिया क्षमता और तीनों सेनाओं के बीच समन्वय है। एक संतुलित, आधुनिक और आत्मनिर्भर सैन्य व्यवस्था भारत की संप्रभुता की रक्षा करने के साथ–साथ हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय शांति में भी योगदान दे सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
3. आर्थिक सर्वेक्षण 2015–16, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।
4. भारत सरकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO), रक्षा अनुसंधान, स्वदेशी तकनीक और सैन्य आधुनिकीकरण संबंधी वार्षिक प्रकाशन।
5. भारतीय थल सेना, संगठन, प्रशिक्षण और राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी आधिकारिक प्रकाशन।
6. भारतीय नौसेना, समुद्री सुरक्षा, हिंद महासागर और नौसैनिक आधुनिकीकरण संबंधी आधिकारिक प्रकाशन।
7. भारतीय वायुसेना। वायु शक्ति, वायु रक्षा और विमानन क्षमता संबंधी आधिकारिक प्रकाशन।
8. Tellis, Ashley J. India's Emerging Nuclear Posture: Between Recessed Deterrent and Ready Arsenal, RAND, 2001.
9. Cohen, Stephen P., and Sunil Dasgupta. Arming Without Aiming: India's Military Modernization. Brookings Institution Press, 2010.
10. Stockholm International Peace Research Institute (SIPRI). SIPRI Yearbook 2016: Armaments, Disarmament and International Security. Oxford University Press, 2016.

*****